# इसलिए है दिवाली इतनी खास !

दीपावली भारत में हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है। दीपों का खास पर्व होने के कारण इसे दीपावली या दिवाली नाम दिया गया है। दीपावली का मतलब होता है, दीपों की अवली यानी पंक्ति। इस प्रकार दीपों की पंक्तियों से सुसज्जित इस त्योहार को दीपावली कहा जाता है। कार्तिक माह की अमावस्या को मनाया जाने वाला यह महापर्व, अंधेरी रात को असंख्य दीपों की रोशनी से प्रकाशमय कर देता है।

दीप जलाने की प्रथा के पीछे अलग अलग कारण या कहानियां हैं। हिन्दु मान्यताओं में राम भक्तों के अनुसार कार्तिक अमावस्या को श्रीराम चन्द्र जी चौदह वर्ष का वनवास काटकर तथा आसुरी वृत्तियों के प्रतीक रावण का संहार करके अयोध्या लौटे थे। आज के परिदृश्य में आसुरी प्रवृत्तियां जहाँ तहाँ दिखाई पड़ती हैं। गोया मानव मात्र में थोड़ी या ज़्यादा मात्रा में ये वृत्तियों में बसकर प्रवृत्तियों में दिखाई देती हैं।

इस बार दीपावली के पूर्व इसपर विजय प्राप्त कर हम दीपावली मनायें तो कैसा होगा! हो सकता है ना? या अभी भी सोचना है? नहीं, अब हमें स्वयं में आत्म दीप जगाना है, जिसमें अच्छाइयों और देवत्व के गुणों को रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में स्थान देना है। आज आसुरी वृत्तियों से हम खुद भी दुःखी हैं और हमारे द्वारा दूसरों को भी दुख ही मिलता है, तो ऐसे रावण या आसुरी वृत्तियों को हमें हमेशा के लिए समाप्त करना है। करेंगे ना? तो इस मान्यता को अपने जीवन से जोड़कर हम चलेंगे तो अवश्य परमात्मा की मदद से हम इन प्रवृत्तियों को निरस्त कर सकेंगे।

## ऐसी ही कुछ अन्य मान्यताएँ

कृष्ण भक्ति धारा के लोगों का मत है कि इस दिन श्रीकृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था। इस नृशंस के वध से जनता में अपार हर्ष फैल गया और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दीये जलाये। अब सोचने की बात है कि नरकासुर नाम का कोई प्राणी हो सकता है? नरकासुर माना हमारा जीवन, जो आसुरी प्रवृत्तियों के कारण नर्क के समान बन गया है, जहाँ दुःख ही दुःख है, उसके रूपक के रूप में ही नरकासुर का नाम दिया गया है। तो हम भी अपने जीवन में झांककर देखें कि यदि कोई ऐसी प्रवृत्ति है जिसने हमें तंग करके रख दिया है, तो हमें भी उसे निकालना होगा। इसने ना सिर्फ मुझे तंग किया है, पर मेरे परिवार, मेरे साथी या जहां भी मैं हूँ, वो प्रवृत्तियां उसी रूप में विषैले बीज ही बोती हैं। परिणामस्वरूप हमें बदले में वो ही मिलता है। ये बात हमें समझनी है, और समझ के साथ इस त्योहार को आत्मदीप जलाकर मनायें।

## दीपावली के दिन की खास बातें...

- रावण पर राम की, अर्थात् बुराई पर अच्छाई की विजय हुई
- श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर वध के पश्चात् चारो ओर हर्ष और प्रसन्नता की लहर फैली
- चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी दीपावली
- उसी दिन ही अमृतसर में 1577 में स्वर्ण मंदिर का शिलान्यास हुआ। इसके अलावा 1619 में दीपावली के दिन सिक्खों के छठे गुरू गोविंद सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था
- इस दिन से नेपाल में नया वर्ष शुरू होता है
- पंजाब में जन्मे स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दीपावली के दिन ही हुआ
- महर्षि दयानंद ने भारतीय संस्कृति के महान जननायक बनकर दीपावली के दिन अजमेर के निकट अवसान लिया
- प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना का दिवस भी दीपावली ही है

जैन मतावलम्बियों के अनुसार चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी दीपावली को ही है।

सिक्खों के लिए भी दीपावली महत्वपूर्ण है। क्योंकि उस दिन ही अमृतसर में 1577 में स्वर्ण मंदिर का शिलान्यास हुआ था। इसके अलावा 1619 में दीपावली के दिन सिक्खों के छठे गुरू गोविंद सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था।

नेपालियों के लिए यह त्योहार इसलिए महान है क्योंकि इस दिन से नेपाल में नया वर्ष शुरू होता है।

पंजाब में जन्मे स्वामी रामतीर्थ का जन्म व महाप्रयाण दीपावली के दिन ही हुआ। इन्होंने दीपावली के दिन गंगा तट पर स्नान करते समय ओम करते हुए समाधि ले ली।

महर्षि दयानंद ने भारतीय संस्कृति के महान जननायक बनकर दीपावली के दिन अजमेर के निकट अवसान लिया। इन्होंने आर्य समाज की स्थापना की।

विश्व को आध्यात्मिक ज्ञान से आलोकित करने वाले प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना का दिवस भी दीपावली ही है। खास बात ये है कि छोटे से समयांतर में अपनी सच्चाई और निष्ठा के बल पर ये विद्यालय सारे विश्व में ये फैल गया। इसलिए ये पर्व सभी के लिए इतना खास है।

हन्दुओं में इस दिन लक्ष्मी के पूजन का विशेष विधान है। रात्रि के समय प्रत्येक घर में धन धान्य की अधिष्ठात्री देवी महालक्ष्मी जी, विघ्न विनाशक गणेश जी तथा विद्या एवं कला की देवी सरस्वती की पूजा आराधना भी की जाती है। तो ये महान पर्व ऐसी विशेषताओं को समेटे हुए है। तो इसी यादगार स्वरूप यदि हम अपने आत्मदीप में ज्ञान का घृत डालकर सदा जागृत रखते हैं, तभी सही मायने में हमारे जीवन ज्ञान की रोशनी से श्रेष्ठ कर्म की धारा बहेगी। और हम जो चाहते हैं कि सुख शांति और समृद्धि से भरा हमारा जीवन हो, वो लक्ष्य हमारा अवश्य पूरा होगा।

**त्रिपुरा।** राज्यपाल महोदय कप्तान सिंह सोलंकी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कविता।

**महम-हरियाणा।** माननीय मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के चांग गांव में पहुंचने पर ईश्वरीय सौगात भेंट कर उनका स्वागत करते हुए ब्र.कु. चेतना तथा ब्र.कु. सुमन।

**आगरा-शास्त्रीपुरम।** अमर उजाला के सम्पादक नीरज कांत गुप्ता राही को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मधु। साथ हैं ब्र.कु. शालिनी।

**गेल गांव-दिबियापुर(उ.प्र.)।** गेल इंडिया लि. के चीफ जनरल मैनेजर पी.के. माटी एवं उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. कृष्णा तथा ब्र.कु. रिया।

**सुन्नी-हि.प्र.।** सेंट्रल जेल कण्डा,शिमला में जेल अधीक्षक सुशील कुमार ठाकुर को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुन्तला। साथ हैं ब्र.कु. रेवादास, ब्र.कु. जीतराम, ब्र.कु. बालकिशन तथा अन्य।

**रूद्रपुर-उत्तराखण्ड।** विधायक राजकुमार ठुकरसल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सूर्यमुखी।

**नोएडा-उ.प्र.।** डॉ. ललित बी. सिंघल,डेवलपमेंट कमिश्नर, एन.एस.ई.ज़ेड. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रेनू।

**नवरंगपुर-ओडिशा।** विधायक मनोहर रंधारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम।

**सीतापुर-उ.प्र.।** एस.पी. प्रभाकर चौधरी को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी।

**मैनपुरी-उ.प्र.।** जिला जेल अधीक्षक हरिओम शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अबन्ती। साथ हैं नरेन्द्र राठौर व अन्य।

**मण्डी-हि.प्र.।** बिजली बोर्ड के चीफ इंजीनियर पी. एल. मासूम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दीपा।

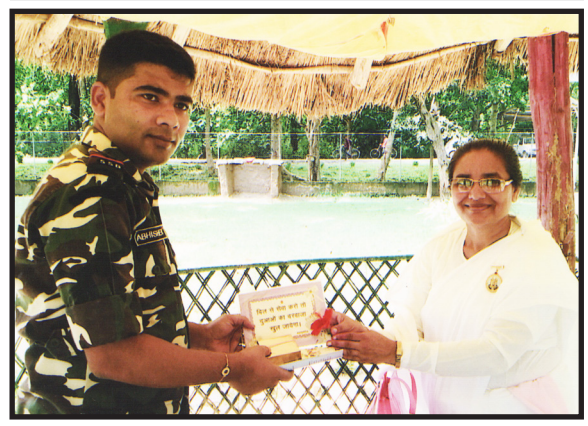

**नेपाल-गुलरिया।** 59वीं वाहिनी एफ कंपनी मूर्तिहा के इंस्पेक्टर अभिषेक यादव को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता।